Part - II

Paper - IV

गृहव्यवस्था (मूल्य)

मूल्य का अर्थ :- मूल्य को विभिन्न अर्थों में लिया जा सकता है। अर्थशास्त्र में किसी वस्तु की कीमत को मूल्य कहा जाता है उदाहरण के लिये चीनी का मूल्य 40/- प्रति कीलो है। इसी प्रकार कुम्हार द्वारा एक मिट्टी का घड़ा बनाया गया, उसके लिये इस घड़े का एक आर्थिक मूल्य (Economic Value) है, चित्रकार द्वारा इस घड़े पर सुन्दर चित्र बना कर रंग भर दिये गये, यह इसका सौंदर्यात्मक मूल्य (Aesthetic Value) है। इस घड़े में ठण्डा पानी पी कर एक व्यक्ति अपनी प्यास बुझाता है, उसके लिये यह तृप्ति प्रदान करने वाला मूल्य (Satisfying Value) है। मूल्य का अर्थ सभी के लिये भिन्न हो सकता है परन्तु इसकी महत्ता सभी के लिये समान और संतुष्टि प्रदान करने वाली होती है। मूल्य मानवीय व्यवहार, मनोवृत्तियों और सोच का आधार है।

मूल्यों की विशेषताएँ :— मूल्यों की विशेषताएँ निम्नवत है।

* मूल्य सामान्य परिस्थितियों में उत्पन्न होते हैं तथा समय स्थान और परिस्थितियों से विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। ~~तथा समय स्थान और~~ एक कामकाजी स्त्री का पत्नी, माँ तथा कर्मचारी के रूप में समाज में विभिन्न स्थानों में अलग अलग मूल्य होता है। यही विभिन्न मूल्य उसके उत्तरदायित्वों का निर्धारण करती है।
* मूल्य भौतिक रूप से नहीं मापे जा सकते परन्तु गुणात्मक रूप में उनका मापन अवश्य किया जा सकता है, जैसे उत्तम, अति उत्तम, हीन इत्यादि।
* सामाजिक एवं वैचारिक मतभेद के चलते मूल्यों को स्पष्ट रूप से धनात्मक एवं ऋणात्मक रूप में बांटा गया है। ~~जिसका~~ यह कहना तार्किक होगा कि धनात्मक एवं ऋणात्मक मूल्यों का चयन करने के लिये व्यक्ति स्वतंत्र होता है।
* मूल्यों की सबसे बड़ी विशेषता है कि सामाजिक तथा पारिवारिक होने के साथ साथ व्यक्तिगत भी होते हैं।
* मूल्य हमारी संस्कृति का प्रतिबिम्ब है। मूल्यों में किसी भी परिवार, इतिहास, समय काल आदि को पहचाना जा सकता है।

classmate

* मूल्य व्यक्तित्व निर्माण में योगदान देते हैं। मूल्य किसी कार्य को करने की प्रेरणा तो देते ही हैं, साथ ही साथ पथ प्रदर्शक और निर्देशक का भी कार्य करते हैं।
* मूल्य स्थायी एवं अस्थायी दोनों प्रकार के होते हैं। स्थायी मूल्यों में परिवर्तन नहीं होता है। यदि कोई परिवर्तन होता भी है तो वह स्पष्ट दिखाई पड़ता है, जैसे, धन, संपत्ति और प्रतिष्ठा में परिवर्तन। अस्थायी मूल्यों में परिवर्तन धीमी गति से होता है और स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ता है। जैसे खान पान में, घर रखने आदि की आदतों में परिवर्तन।
* समस्त मूल्यों का उद्देश्य संतुष्टि प्रदान करना होता है।
* मूल्य स्वयं विकसित किये जा सकते हैं।
* मूल्यों में तीव्रता पाई जाती है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिये अलग अलग होती है।

मूल्यों का वर्गीकरण :
मूल्य नितान्त व्यक्तिगत होते हैं। मूल्यों की ऐच्छिक प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति मूल्यों के समूह में से कोई भी मूल्य चुन सकने के लिये स्वतंत्र होता है। मूल्यों को वर्गीकृत करने के लिये प्रणालियाँ बनाई गई है।
प्रभुत्व के आधार पर : मूल्यों का वर्गीकरण : — प्रभुत्व के आधार पर मूल्यों को दो वर्गों में बाँट गया है।
आन्तरिक : व्यक्ति में पाये जाने वाले प्राकृतिक गुण आन्तरिक मूल्य कहलाते हैं। जैसे कला के प्रति रुचि, पारिवारिक सदस्यों के मध्य सौहार्द।
आदर्शात्मक मूल्य : ये आदर्शों पर आधारित है, जैसे सही- गलत ईमानदारी, सत्य, निष्ठा आदि का पालन।
प्रो० पी एस नायडु के अनुसार : भारतीय संस्कृति परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए जीवन मूल्यों को निम्न छः भागों में बाँटा गया है।
(1) शारीरिक मूल्य (2) मनोवैज्ञानिक मूल्य (3) आर्थिक मूल्य (4) सामाजिक मूल्य
(5) दार्शनिक मूल्य (6) आध्यात्मिक मूल्य